REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2022

भारतीय भाषाओं में बाल कथा साहित्य के पुरातन स्वरूप का अध्ययन

अनुपमा तिवारी[1] , डॉ. ओम प्रकाश द्विवेदी[2]
[1]शोधार्थी हिन्दी , अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]सहायक प्राध्यापक हिन्दी, यमुना प्रसाद शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिरमौर, जिला रीवा (म.प्र.)

सारांश –

हिंदी बाल कहानी का प्रारंभिक युग बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से लेकर 1947 तक है। जाहिर है, बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में जिन बाल कहानियों की नींव रखी गई थी, उनके पीछे दादी–नानी की कथा सुनाने की यह सदियों पुरानी वाचिक परंपरा भी थी, जो लिखित शब्द या कागजों पर आने के लिए विकल थी। हाँ, उसे अपेक्षित संशोधन या संपादन की दरकार थी, जिससे वह अपनी किस्सागोई को बरकरार रखते हुए भी, आधुनिक और नए अर्थों का वहन करे। कम से कम आज के समय या आधुनिक समाज के नैतिक मूल्यों का हनन करने वाली या उन्हें पीछे ले जाने वाली कहानियाँ वे न हों। आजादी से पहले 'बालसखा' और 'बाल विनोद' आदि पत्रिकाओं में छपने वाली कई कहानियों में नयापन और आधुनिकता की धमक है। इनमें जेपी कांत विशारद की 'साहब का नौकर', महावीर प्रसाद श्रीवास्तव की 'गंदा लड़का', दीनबंधु पाठक की 'नाशपातीवाला' और बलराम वनमाली की 'बाल मनोविकास' कहानियाँ तो अपने समय में खासी चर्चित हुई थीं। अलबत्ता बीसवीं शताब्दी के शुरुआती दौर में, जब बाल साहित्य की जरूरत और महत्व के बारे में गंभीरता से सोचा गया, तभी बाल कहानियों की जरूरत की तरफ लेखकों का ध्यान गया और इस बात पर भी कि बच्चों के लिए कैसी कहानियाँ होनी चाहिए। इस दौर में हिंदी बाल कहानियाँ लिखने या कहें कि इस विधा की नींव रखने वाले प्रमुख कहानीकार थे – महावीरप्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, मोहनलाल महतो 'वियोगी', सुदर्शन, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, विद्याभूषण विभु, रामवृक्ष बेनीपुरी, रामनरेश त्रिपाठी, हंसकुमार तिवारी, जहूरबख्श, शेख नईमुद्दीन मास्टर तथा स्वर्ण सहोदर।

मुख्य शब्द – बौद्धिक शक्ति, बाल कहानिया, बाल मनोविकास एवं दादी–नानी।

प्रस्तावना –

असमिया में वैज्ञानिक बालसाहित्य भी प्रचुर मात्रा में हैं। महाकाश अभियान, दुरन्त आकाशर, उरन्त बातरी, विज्ञान आरू वैज्ञानिक, पतंगार कथा, विश्वरहस्य, नभेर आश्चर्य मानवार आदिकथा, प्राकृतिर पुतला खेला, मानव सभ्यता, फुलर साधु, जन्तुर साधु, आविष्कारर काहिनी, जीवजन्तुर साधु आदि कृतियाँ सुलिखित हैं।''[1] सर्वश्री लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ (बुढ़ियार साधु, सुरभि काका देवता और नाती लोरा), वेणुधर शर्मा (लातुमणि), दुलारवर ठाकुर (घुमटि जाओ रे) अतुलचन्द हजरिया, सैयद अब्दुल मलिक, प्रेमधरदत्त, श्रीमती अमृता गोस्वामी, श्रीमती लीला गर्ग, नरेन्द्रनाथ शर्मा, बलदेव महन्त, रत्नेश्वर महन्त, विषयचन्द विश्वासी, विश्वनारायण शास्त्री, अनु बरुआ, डॉ. महेश्वर नेओग आदि अच्छे बाल कहानीकार हैं।''[2]

श्री नन्द किशोर बल ने 'नाना बाया गीत' की रचना सन् 1915 में की। इसे पाठ्यक्रम में बेहतर माना गया। अँगरेजी के 'लला बाइसांग' जैसी श्रुति संगीत की अच्छाइयों के कारण इनको व्यापक स्वीकृति प्राप्त हुई। मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि पर नन्द किशोर की रचनाएँ प्रसिद्ध हुई। निंदिया काकी, बिल्ली बहनी, काला कौआ, शीर्षक उनकी रचनाएँ आज भी लोकप्रिय हैं। उड़िया बाल साहित्य प्रचार प्रसार के कार्य में देशी राजाओं की आर्थिक सहायता का उल्लेखनीय सहयोग था। रामचन्द्रदेव ने बामण्डा के राजा अशोक का वर्णन किया है। नन्हें–मुन्नों के लिए सर्वश्री बामनचरण मिश्र (शिशु संगीत), विश्वनाथ षाइकराय (राष्ट्रीय जीवन संगीत) एवं श्रीमती पुण्य प्रभा देवी ने (शिशु, सैनिक) अच्छा साहित्य लिखा है। इसके अतिरिक्त सर्वश्री गोदावरीश महापात्र (छविर कविता, शिशु कथामाला, कुनूर हाती, मो खेल साथी), निकुंज कानूनगो (इन्द्रधनुष), उपेन्द्र त्रिपाठी (पिलांक पशुप, श्री पुराण, निशा राक्षसी), अक्षय कुमार घोष (बाइस मजा), कविचन्द्र कालिचरण पट्टनायक (पिलांक कर्म संगीत), मुक्तिकान्तराय (बणफुल) आदि ने बच्चों के लिए रोचक और प्रेरक पुस्तकें लिखीं।

विश्लेषण –

उड़िया बाल साहित्य में मधुसूदन राव बाल साहित्य के जनक थे। उनकी रचनाएँ नवलेखन प्रोत्साहन के लिए थी। सन् 1895 में उनकी रचित पुस्तक 'वर्णबोध', 'भाषा की सरलता', 'सरस संगीतात्मकता' और 'मनोविज्ञान की स्वाभाविकता' के कारण बहुत ही मनमोहक थी। प्रत्येक पद्य, प्रभु के प्रति आस्था और उपदेशात्मकता की अधिकता रखता था। प्रकृति सौन्दर्य का चित्रण इन रचनाओं की विशेषता है। मधुसूदन राव ने आधुनिक बाल साहित्य के पद्य और गद्य स्वरूप का रूपायन किया था। वह बाल कहानी के आदि प्रवर्तक भी माने जाते हैं। उड़िया बाल साहित्य के क्षेत्र में ललित रचनाओं से जिन कवियों ने अक्षय कीर्ति अर्जित की है उनमें पिलांक रामायण, पिलांक महाभारत और पिलांक भागवत के रचनाकार नीलकण्ठदास, मील के पत्थर की तरह बहुत महत्वपूर्ण हैं।

उर्दू के ख्यातनामा लेखक किशनचन्दर ने बच्चों के वास्ते चिड़ियों की 'अलिफ लैला' और 'उल्टा दरख्त' नाम से दो सुन्दर पुस्तकें लिखीं। उर्दू की अन्य मशहूर किताबों में सालिब आबिद हुसैन के नाटक, अबरार मुहसन की 'डाकू की गिरफतारी', सैयद वशीर हुसैन कृत 'दुनिया के बसने वालों', ज्यादा चाव से पढ़ी जाती है।

कन्नड़ भाषा का बाल साहित्य बहुत रोचक और प्रेरक है। श्रीमती भा.म. ललिताम्बा ने बाल साहित्य के शब्द चयन की सराहना में लिखा है, बच्चों के मानसिक स्तर को समझकर, उनके लिए इतनी सुन्दर और सहज सामग्री का संकलन कन्नड़ में किया गया है कि अत्यन्त प्रिय लगने वाले शब्द माता के हाथ से बच्चे को दिये जाने वाले अन्न के ग्रास की तरह मोहक लगते हैं। एक लोरी का भाव है – ''चुन्नू तू रोता क्यों है? मैं तुझे हर चीज दूँगी, चार–चार भैंसों का दुहा हुआ ताजा झाग भरा दूध दूँगी।''[3]

श्री जी.पी. राजरत्नम् की रचनाएँ, बालमिठाई के टुकड़ों जैसी धीरे–धीरे घुलकर अपनी श्रेष्ठता आज भी सिद्ध करती हैं। डॉ. सिद्ध पुराणिक के शिशुगीत भी वैशिष्ट्यपूर्ण हैं। प्रो. डि.एल. नरसिंहयार कृत 'गोविन्द हाडु' जनपद कथा पर आधारित है। श्री म.बा. जहाँगीरदार कृत 'गीतलीले' और कीलकुदरे, श्री कु.वे. पुत्रीकृत किन्दरजोगी और हारुल, श्री वि.वि सनदिकृत गृह पंचमी गुलाबी गोंचलु (गुलाबी गुच्छल) जिलेबी झुण–झुण श्री अजित कुमार कृत कारंजी, काव्यानन्द का 'तुप्पा रोहिगे गे गे, शै, गु. बिरादर कंन्निहाडु (मेरे गीत) अच्छी रचनाएँ हैं। सर्वश्री शान्तकवि, बेंकट रंगों कट्टी, उंपुटि चेन्नबसप्प, शंभुलिगप्प, पंजेमंगेशराव, कुलकर्णी आदि बालरचना के क्षेत्र में अन्य तारागण हैं।''[4]

बच्चों के लिए कश्मीरी लोक कथाओं में तोते को चतुर पक्षी और उल्लू को जादू सीखने का साधन मानते हैं। पुराने राजा–रानी, नयी कहानियों में होने पर भी, नयी आधुनिक समस्याओं के विषय बनते हैं। आकाशवाणी केन्द्र, कठुआ, श्रीनगर और जम्मू से बच्चों के कार्यक्रम अच्छे स्तर के प्रसारित होते हैं। बाल गीत/बालनाटक रोचक और प्रेरक होते हैं। ''पहले शिक्षा विभाग और अब एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली द्वारा आयोजित बाल साहित्य प्रतियोगिताओं के चलते कश्मीरी बाल साहित्य पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है और कश्मीरी बाल साहित्य को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने के प्रयास किये जा रहे हैं। सन् 1959 में श्री शंभुनाथ भट्ट की पुस्तक बालयार भारत सरकार ने पुरस्कृत की थी। डॉ. हरिकृष्ण देवसरे के अनुसार कश्मीरी बाल साहित्य की उल्लेखनीय कृतियाँ हैं, 'मोक्तालार (कृतिकार द्वय हैं श्री नाजी मुनव्वर और अवतार कृष्ण), 'कयकशायर (लेखक श्री वंशी निराश), 'पोशीमल' (सोमनाथ साधू), 'शमा–ए–वतन' (श्री फजील कश्मीरी), 'भारत

की लोक कथा' और 'देश–विदेश ची लोक कथा' आदि। इनमें से अन्तिम दो, प्रकाशन विभाग दिल्ली द्वारा प्रकाशित हैं।''[5]

वर्तमान कोंकणी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाने लगी है और इसके अच्छे परिणाम सामने आए हैं। पाठकों की संख्या दिनोदिन बढ़ने से कोंकणी भाषा और साहित्य को समझने की सुविधा मिली है। कोंकणी भाषा अपना अस्तित्व देखते हुए भी जितनी मराठी और हिन्दी के सन्निकट है उससे न्यूनाधिक कन्नड़ और मलयालम् से सम्बन्धित है। कोंकणी साहित्य में मराठी से भक्तिपरक रचनाएँ आई। पुर्तगालियों के गोवा आने पर मसीही कविताएँ आई लेकिन आधुनिक काल में भारतीय भाषाओं की तरह ही कोंकणी में गद्य साहित्य अनुवाद के साथ–साथ पल्लवित हुआ। गद्य में कहानी और नाटक ने कोंकणी में अपनी पहचान अलग से बनाई है। ऐतिहासिक क्रम से कोंकणी के कवि कृष्णदास शर्मा हैं। इन्होंने रामायण–महाभारत की कथाओं के अनुवाद कोंकणी में 17वीं सदी में मराठी मूल से किए। फादर–जोकिम–द–मिरण्डा ने कोंकणी में लम्बी वन्दना लिखी, 'रिग्लो जेसु भोलान्तम्' यीशु का पुनर्जन्म। दोनों बरेलों ने पापियन्सी वसेरथिनी (पापियों के रक्षक) स्तुति रूप में लिखीं। आधुनिक कवियों में अपनी युगान्तकारी रचनाओं के लिए बी. बोरकर, एम. सरदेसाई, आर.बी. पंडित, सुधाकर प्रभु आदि प्रसिद्ध हैं।

गुजराती बाल साहित्य में अन्य विधाओं की अपेक्षा कहानी सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम रही। इस विधा की समृद्धि में हाथ बँटाने वाले कलाकारों में जयभिक्खु जीवराम जोशी, श्रीकांत त्रिवेदी, यशवन्त मेहता, हरीश नायक, गिरीश गणात्रा, देवेन्द्र कुमार पण्डित वगैरह के नाम अग्रिम पंक्ति में गिने जा सकते हैं। कविता के लेखन में सुरेश दलाल, जतीन आचार्य, बाल मुकुन्द दुबे, रमणलाल सोनी, त्रिभुवन व्यास जहाँ प्रसिद्ध हैं वहीं नाटकों की रचना में यशवन्त पाण्ड्या, धराणी, इन्द्र बसावड़ा, हिम्मतलाल दबे ने अपने नाम को प्रतिष्ठित किया है। अन्य विधाओं के साहित्यकारों में शिशुभाई त्रिवेदी, सोमलाल शाह गणनीय हैं।

डोगरी, हिमांचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, पंजाब और चण्डीगढ़ प्रदेशों में प्रचलित है। यह पंजाबी से बहुत मिलती–जुलती है। चौदहवीं सदी में लल्ल माँ डोगरी की कवयित्री थीं। मीरा की भाँति उनके बाखों में कृष्ण भक्ति है। उनके पदों के गायक हिन्दू भी हैं और मुसलमान भी। भेंटा, डोगरी की आराधनात्मक लम्बी कविताएँ हैं, जो रेणुका मंदिर, सराहन भीमा काली मंदिर, ज्वाला जी, काँगड़ा जी, चिन्त्यपूर्णी, वैष्णवी आदि देवी स्थानों में कभी–कभी भक्तों से सुनी जा सकती है। इन आराधना गीतों में शिवस्तुति भी रहती है। शैशवावस्था से देहावसान तक के सोलह संस्कारों, चिन्ता और चिन्तन के हर पक्ष की एक लम्बी परम्परा को समेटे हुए हैं, डोगरी कविता।''[6]

तमिल बालगीतों की जननी कवयित्री अव्वैयार ने बालकों को नीति शिक्षा देने के लिए 'आन्ति चूडिकोन्डैवेंदम की रचना की। स्वरों के क्रम और वार्तालाप शैली में इन्होंने ललित कविताएँ लिखीं। श्री तिरुवल्लुवर के कुछ पद भी वात्सल्यपूर्ण हैं। इनसे शैशव वर्णन की पिल्लै तमिष साहित्यिक विधा शुरू हुई। पिशि संज्ञा है, बाल पहेलियों के लिए तमिल में। एक प्रचलित अनुत्तरित पहेली है, 'कत्विगलै नडक्कुम्' (चाँद को मुँह में लटकाए पर्वत चला करता है।) प्रारम्भिक तमिल रचनाओं में संस्कृत का परावर्तित प्रभाव देखने को मिलता है।

सर्वश्री पेरिय स्वामी तूरन, तीर्णकै, उलगनाथन्, नमः शिवाय मुदालियर, सी.आर. चाड़ामणि, कोत्तमंगलम् सिब्बू, भारतीदाशन, देशिक विनायक पिल्ले तंबि, श्रीनिवासन्, तमिलगन, तिरुचित्र वासुदेवन, रंगराजन, पित्तामूर्ति, नारा नाचियप्पन, अखिलम् संत दण्डपाणि आदि ने रोचक और प्रेरक बाल साहित्य रचा। कुलदै कविंडर (बालकों के कवि) के रूप में श्री ए.एल. वलियप्पा ने मधुर, सरस गेय गीत लिखे (पलन लाभ क्या, शीर्षक कविता में उन्होंने लिखा –

''बच्चों के खेलने कूदने के लिए
विशाल मैदान बनाने वाला
बीच में काँटे बिछा रक्खे
तो वह धोखा होगा न?''[7]

शिशु गीतम् में श्री वलियप्पा तत्व की बात कहते हैं, नारियल के पेड़ पर बढ़ें तो नारियल तोड़ सकते हैं –

''आग के पेड़ पर चढ़ें तो आग ले सकते हैं।
अमरूद के पेड़ पर चढ़ें तो अमरूद पा सकते हैं।
परन्तु केले के पेड़ पर चढ़ें तो गिरेंगे ही।''[8]

तेलुगु बाल साहित्य के प्रारम्भ में वात्सल्य रस के गीत रचे गए जिनसे बच्चों को दुलराया जाता है। इन गीतों को लालीपटालु कहते हैं। लोरियों के लिए जोलापटालु प्रचलित हैं। श्री बेटूरि पद्माकर शास्त्री ने एक संकलन तैयार किया जिसमें कुछ गीत बच्चों को भात खिलाने और चाँद दिखाने से सम्बन्धित है और कुछ काव्य कथाएँ हैं। इस प्रकार बालकों के खेलों को आधार बनाकर भी बाल गीतों की रचना की गई। ऐसे खेल गीतों में चम्मचक्क, वित्ति, गुडुगुडु, गुंचम आदि हैं। बालगीतों के अन्य विषयों में चींटी, चूहा, मक्खी आदि पर जहाँ रचनाएँ लिखी गई, वहीं लोक प्रचलित कथाओं में इनको कहीं पात्र या नायक बनाकर काव्यकथाएँ भी लिखी गईं। श्री गिड्डु सीतापति की पुस्तक बालानन्दम् अच्छी कृति है। गीतात्मकता इसका प्रमुख गुण है। सर्वश्री के.जे. चिन्ता दी विशतुलु (लक्क पिड़तलु), हरि अउदी सिसु (जनपद वांगमय), मोल्लेरे (मधुर कवितालु), वेंकटापारवसी स्वराकवुलु (बालगीतावली), नरसिंह राव बडि बंदखिम (बालिका भूषणम्), एल.एन. वेंकटाश्वामी प्रताप रेड्डी, रंगयाचेट्टी एन गंगाधरम् (सोलामेरू) आदि सुप्रसिद्ध बालगीतकार हैं।[9]

बाल मासिक पत्रिकाओं में चन्दामामा, बाल आनन्दम्, भारतीय माले संघम्, बाल ज्योति, चित्रारिलोकम्, बोमरिल्लु, बालप्रभा और बालचंद्रिका (बाला ला अकादमी हैदराबाद) सुविख्यात है। दैनिक आन्ध्र ज्योति, प्रजामाता एवं आन्ध्र पत्रिका आदि दैनिक समाचार पत्रों में बाल स्तम्भ प्रचलित हैं।

पंजाबी में बाल साहित्य का लेखन और प्रकाशन बड़े ही विलम्ब के साथ हुआ। वैसे 'बालक' नाम से एक पत्रिका तीस–चालीस वर्ष पूर्व ही निकली, जिसके माध्यम से कथा, कहानियाँ व गीत बच्चों के लिए उपलब्ध होने लगे। परन्तु पाँचवें दशक में प्रकाशित दूर दुराडे देश इत्यादि बहुत ही लोकप्रिय हुई। पंजाबी भाषा के बाल लेखकों में सर्वश्री प्यारा सिंह सहराई, ओमप्रकाश, गुरुदयाल सिंह, बलवन्त सिंह, जसवन्त सिंह, करतार सिंह, दर्शन सिंह, गुल चौहान, अमृता प्रीतम, अमरगिरी, हरनामदास आदि जाने–माने लेखक माने जाते हैं। कथा साहित्य के लेखन में ओमप्रकाश (सुनो–सुनाओ), राजदुलारे (कर भला सो हो भला), गुरुदयाल सिंह (टुक्क खौह लए कांबा) नामी लेखक माने जाते हैं। पंजाबी में ज्ञान सम्बन्धी भी रचनाएँ बच्चों के लिए रची गई हैं, जिनमें शमशेर सिंह, अनवन्त कौर, अवतार सिंह, दीपक की कृतियाँ बच्चों में विशेष प्रचलित हैं। हास्य और व्यंग्य के क्षेत्र में बलवन्त सिंह शीतल और प्यारा सिंह दाता का योगदान प्रशंसनीय है।

श्री माइकेल मधुसूदन दत्त और श्री रामनारायण विद्यारत्न द्वारा क्रिश्चियन हैन्स एण्डरसन की कहानियाँ बँगला में अनूदित की गई। इनके अतिरिक्त सर्वश्री केशवचन्द्र सेन, महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर, अक्षय कुमार दत्त, द्विजेन्द्र लाल राय, बंकिमचन्द्र चटर्जी आदि ने मौलिक और अँगरेजी से अनूदित बालोपयोगी पुस्तकें लिखीं। सन् 1878 में 'बालक बन्धु' पत्र बच्चों के मनोरंजन के लिए प्रसिद्ध समाज सुधारक श्री केशवचन्द्र सेन ने निकाला। इसमें तद्कालीन दिग्गज साहित्यकारों ने बच्चों के लिए लिखने का कर्तव्य पूरा किया और बाद में इसने एक अच्छी और अनुकरणीय परम्परा का रूप विकसित किया। बालक बन्धु ने उदीयमान लेखकों को पर्याप्त प्रोत्साहन दिया।

एक व्यापक फलक पर बंगला बाल साहित्य का विस्तार हुआ। परी कथाओं, ऐतिहासिक तथा रहस्यात्मक कथाओं के साथ विनोदपूर्ण कहानियाँ भी लिखी गईं। श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने छैलेबेला, शिशु और मुकुट, पुस्तकें प्रकाशित कराई। सर्वश्री नवकृष्ण घोष चन्दीचरन बंदोपाध्याय, हेमकान्त बन्दोपाध्याय, सुकुमार राय, सुविनय राय, कुलदरंजन राय, सुखलता राय आदि ने बहुत लोकप्रियता अर्जित की। बंगला बालोपन्यास में 'डाकातोर हाते' श्री अचिन्त्य कुमार सेन, बाल नाटकों में श्री अखिल नियोगी का 'कनाई बलाई' विश्व प्रसिद्ध है, ज्ञान विज्ञान की पुस्तकों में दस खण्डों में 'शिशु भारती', 'बाल शब्द कोष' श्री जोगेन्द्रनाथ गुप्त, बकिमचन्द्र की दुर्गेश नन्दिनी आदि शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय का 'बिन्दूर छेले, मझली दीदी उपन्यास, बंगला साहित्य के गौरव रवीन्द्रनाथ ठाकुर का बाल साहित्य उल्लेखनीय है। बालगीतकारों के रूप में सुकुमार राय (आबोल ताबोल), मोहित घोष (टापर टुपुर), निर्मलेन्दु गोस्वामी (खेतार राज्ये), रवि रंजन चटर्जी, मंजिल सेन (पहुआ) बहुत प्रसिद्ध है।

मिथिला निवासी अयाचि मिश्र के सुपुत्र संस्कृतज्ञ का कथन, 'बालोऽहं जगदानन्द न में बाला सरस्वती।' अपूर्णे पंचमें वर्षे वर्णयामि जगतत्रयम्।।'' मैथिल बाल साहित्य का उद्‌गम माना जाता है। मिथिला के मधुर लोकगीतकार चन्द्रमणि, व्यंग्यकार नाटककार डॉ. अरविन्द कुमार कुक्कू, साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त कवि डॉ. भीमनाथ आदि ने साम्प्रदायिक सौहार्द्र, विज्ञान–उपकरण, आधुनिक परिवेश को अपनी कृतियों में चित्रित किया

बाल साहित्यकार के रूप में सर्वश्री (डॉ.) रमेश मिश्र, रमानाथ झा, हरिमोहन झा, आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन', डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', गोविन्द झा, डॉ. रामदेव झा, प्रदीप, मैथिलीपुत्र, डॉ. आर.सी. प्रसाद सिंह, रमानाथ मिश्र, 'मिहिर', डॉ. परमेश्वर मिश्र, श्रीमती सुशीला झा, श्रीमती सेफालिका वर्मा, डॉ. केदारनाथ झा, डॉ. कांचीनाथ झा, किरण, जीवन झा, जगदीशचन्द्र ठाकुर, काशीकान्तमिश्र 'मधुप', सत्यदेवनारायण सिन्हा आदि प्रतिष्ठित हैं। मैथिल दैनिक समाचार पत्रों में बच्चों के लिए साप्ताहिक परिशिष्ट निर्धारित रहते हैं। प्रयाग से बटुक (1949) श्री रमाकान्त मिश्र सम्पादित बाल पत्रिका है। धीया पूता (1957) सम्पादक श्री धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' अन्य प्रसिद्ध पत्रिका है। वैसे तो साप्ताहिक नालन्दादर्पण हिन्दी का पत्र है लेकिन इसमें मैथिली और मैथिल साहित्य सम्मिलित रहता है। इसके सम्पादक डॉ. स्वर्ण किरण अनेक बाल पुस्तकों के कृतिकार हैं। कलकत्ता से प्रकाशित 'प्रवासक भेंट' में भी बाल स्तम्भ रहता है।

श्री व्ही.के. ओक ने 'बालबोध' मासिक का प्रकाशन सन् 1881 में आरम्भ किया। इसकी एक सम्पादकीय में बाल साहित्य को शैक्षिक पाठ्यक्रम से अलग रखने का आग्रह था। श्री ओक ने बालबोध के प्रकाशन में निरन्तर घाटा सहा लेकिन प्रकाशन चलाया। सन् 1906 में श्री वासुदेव गोविन्द आप्टे ने 'आनन्द' का प्रकाशन समसामयिक साहित्यकारों के सहयोग से शुरू किया। श्री आप्टे और उनके साथियों ने मनोरंजन पक्ष को प्राथमिकता दी। शाला पत्रक, चाँदोबा, मुलांचे मासिक आदि बाल पत्रिकाओं ने बाल कल्याण का अनुकूल परिवेश तैयार किया। कालान्तर में फुलवाड़ी, गोकुल (सम्पादक अमरेन्द्र गाड़गिल), गमुनजमन, चिक लेट, बालोद्यान, चम्पक, बालमित्र (सम्पादक भा.रा. भागवत), किशोर कुमार आदि पत्रिकाओं और दैनिक साप्ताहिक पत्रों के बालस्तम्भों के माध्यम से प्रभूत तथा श्रेष्ठ बाल साहित्य सृजित हुआ।

क्षेत्रीय संस्थाओं के अतिरिक्त बालकन जी बारी द्वारा सन् 1937 में मुम्बई में प्रथम बाल साहित्य सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें श्री गोपीनाथ तलवारकर ने अपना जीवन ही बाल साहित्य को समर्पित कर दिया था। सन् 1944 में श्री वीरेन्द्र आढ़िया ने बाल साहित्य लेखन, प्रचार, प्रसार को आन्दोलन का विषय बनाया। सन् 1945 में द्वितीय बाल साहित्य अधिवेशन में श्रद्धेय साने गुरु जी की उक्ति को प्रमुख सन्देश बनाया गया –

''करील मनोरंजन जो मुलांचे।
जड़ेल नाते प्रभुशी तयांचे।।''

(जो बच्चों का मनोरंजन करते हैं, वे अपना नाता प्रभु से जोड़ देते हैं।)

वैलोप्पिल्ली श्रीधर येनोन का बाल कविता संग्रह कुन्नि मणिकल बहुत प्रसिद्ध है। हिमवान्टे पुत्तिकल (हिमालय की पुत्री) अन्य कृति है। श्री एन.वी. कृष्णवारियर की रचना 'यंत्रविद्या' महत्वपूर्ण है। कुंजुण्णी ने मनोविज्ञान परक रचनाएँ लिखी हैं। श्री केरल वर्मा और श्री जी. शंकर कुरूप (ओलप्पीपि तथा उलंचुष्टुकल) की रचनाएँ ऐतिहासिक हैं। अन्य कवि हैं, सर्वश्री पाला नारायणन नायर (अभिनवगानंगल, शिशुगानंगल, अंशुमालि), एम.पी. अप्पन (किलिस्कोंचल), के.जी. सेतुनाथ (मषिविल्लु कनकच्चिनंका, तलिरुकल लालप्पेलि, नल्ललोकं), गोपाल कृष्णन कौलिषि, टी.वी. गोग, एवूर परमेश्वरन् अक्कित, सी.जे. मण्पुम्पटुं, वेल्लायण अर्जुनन आदि। एन.सी. ई.आर.टी. दिल्ली द्वारा बाल साहित्य प्रतियोगिता में श्री के.जी. सेतुनाथ, सम्मानित किये गए हैं।

राजस्थानी भाषा में बच्चों के साहित्य का विपुल स्रोत लोकसाहित्य ही है। गणित के प्रश्न इस प्रकार पूछते हैं –

आधी पूंजी ब्याज में, आधी पूंजी बजार।
सोना पांती सोलगी, नगदी साठ हजार।।

श्रीराम निरंजन शर्मा ठिमाऊ (पिलानी) राजस्थानी भाषा के सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार हैं। राजस्थानी में उनके लिखे बाल नाटकों के नाम हैं, टमरक टूँ, मटकाचर, जनजागरण, बढ़ते कदम, बालशक्ति, सपनों साचो होगो, सच्ची कमाई, आपका बच्चा आदि। कहानी संग्रहों में 'बेमाता का आफ', 'बच्चे छोटे काम बड़े' चर्चित हैं। ठिमाऊ जी के सामूहिक गान अनेक प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत हुए हैं और इनको समवेत स्वरों में गाकर प्रतिभागियों ने पुरस्कार अर्जित किये हैं। 'गदगदी' राजस्थानी कविताओं और 'आओ बात करों' रोचक वार्ताओं का संकलन है।

राजस्थानी के वर्तमान साहित्यकारों में सर्वश्री डॉ. भवानीलाल भारतीय, कपूरचन्द 'कुलिश', दीनदयाल ओझा, हजारीमल बांठिया, मनोहर मनेचा, परमानन्द पुरोहित, यादवेन्द्र चन्द्र शर्मा, मंगल सक्सेना, गंगाधर शास्त्री, डॉ. महेन्द्र भानामत्, डॉ. भगवती लाल व्यास, राधेश्याम मेहता, श्रेणीदान चारण, श्रीमती विजय लक्ष्मी मेधा, डॉ. मनोहर शर्मा, डॉ. विष्णु चन्द्र पाठक, डॉ. बंत सिंह राजपुरोहित, रानी लक्ष्मी कुमारी चूंडावत, कन्हैयालाल सेठिया, डॉ. दशरथ शर्मा, नरोत्तम स्वामी, रमेश मोरोलिया, डॉ. आशु, दीनदयाल शर्मा, अनंत कुशवाहा, सुधि, डॉ. भवदत्त महता, डॉ. जीवन महता, डॉ. भैरूलाल गर्ग आदि आज भी राजस्थान की गरिमा को अपनी रचनाओं में जीवंत किए हुए हैं।

सिन्धी बाल साहित्य की पुस्तकों पर गुजरात सरकार ने सर्वश्री संतरामदास, जेठोलालवानी, बी.एच. आडवानी, घनश्याम सोंगर, चन्द्रसेन नावानी, रामभाग चन्दानी, हूँदराज बलवाणी आदि को पुरस्कृत किया है। इसके साथ ही गुजरात सरकार ने सिंधी में अन्य भारतीय भाषाओं की पुस्तकें अनूदित और प्रकाशित कराई हैं। बालसिन्धु संस्था भी अप्राप्त पुस्तकों का पुनर्प्रकाशन कराती हैं। गुजरात सरकार इसके लिए बालसिन्धु को नियमित अनुदान देती है। हिन्दी में सिन्धी के बालगीत, दो भागों में श्री हूँदराज बलवाणी के संपादन में प्रकाशित हुई है। पहलं ये गीत बालसाहित्य समीक्षा में प्रकाशित हुए थे बाद में दो पुस्तकें तैयार हो गई। सिन्धी भाषा देवनागरी लिपि में लिखने से प्रचार–प्रसार में अनुकूल प्रभाव पड़े हैं।

बालसाहित्य में नीति–रीति का ज्ञान कराया जाता था। 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में शकुन्तला और भरत का संवाद प्राप्त है। इसे रोचक बालसाहित्य मान सकते हैं। बाद में बौद्ध और जैन ग्रन्थों में जीवन प्रसंग और कथाएँ सम्मिलित हुईं। प्रहेलिकाओं के अंश हमें संस्कृत ग्रन्थों में मिलते हैं। 'दशकुमार चरितम्', 'पंचतंत्र', 'बैताल पंचविंशति', 'नैषध चरितम', 'उत्तर रामचरित', 'कादंबरी' आदि के माध्यम से हमें रोचक और शिक्षाप्रद बालसाहित्य प्राप्त होता है। अपनी गुणात्मकता से संस्कृत विश्वव्याप्त भाषा है। बच्चों की मासिक पत्रिका के रूप में संस्कृत में चन्दामामा मद्रास से प्रकाशित होती है। इसकी प्रसार संख्या चालीस हजार से अधिक है, अपने आप में संस्कृत की व्यावहारिकता का यह प्रमाण है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः इक्कीसवीं सदी में बाल साहित्य के समक्ष अनेक चुनौतियाँ मुंहबाए खड़ी हैं। सम्प्रति स्थिति निराशाजनक है, परन्तु इतनी चिंताजनक भी नहीं कि उसमें सुधार की कोई सम्भावना ही न हो। समकालीन हिन्दी बाल साहित्य विषय और शैली की दृष्टि से बहुआयामी है। बालमन के अछूते पहलुओं का उसमें उद्घाटन हुआ है। बाल उपन्यास ने लोकप्रियता के शिखर को छुआ है। हर युग में हर साहित्यसर्जक चर्चित साहित्यकार नहीं कहलाता। सच कहा जाए तो बाल साहित्य की रचना आसान है भी नहीं। इसके लिए रचनाकार के पास बालमन का होना जरूरी है। बीसवीं सदी में बाल साहित्य प्रमुखता से उभरकर सामने आया। वैसे यह एक तथ्य है कि किसी भी देश के साहित्येतिहास में एक विधा के रूप में बाल साहित्य का आगमन बाद में हुआ है। शुरू–शुरू में लगभग हर भाषा के साहित्य में बाल साहित्य को उपेक्षा की दृष्टि से देखा गया, लेकिन धीरे–धीरे दृष्टिकोण में परिवर्तन आया और भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य को प्रतिष्ठा मिली एवं उसके महत्व को समझा गया। बाल साहित्य को लेकर गंभीर चिंतन और विमर्श का सिलसिला भी शुरू हुआ। इस बात पर भी जोर दिया गया कि स्वस्थ बाल साहित्य की रचना बहुत जरूरी है।

संदर्भ –

[1] राष्ट्रबन्धु – भारतीय बाल साहित्य की भूमिका, पृष्ठ 8
[2] डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल – भारतीय बाल साहित्य, पृष्ठ 7
[3] श्रीमती भा. म. ललिताम्बा – कन्नड़ बाल साहित्य, पृष्ठ 21
[4] डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल – भारतीय बाल साहित्य की भूमिका, पृष्ठ 22
[5] डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल – भारतीय बाल साहित्य की भूमिका, पृष्ठ 26
[6] गंगाराम – डोगरी बाल साहित्य, पृष्ठ 32
[7] सुब्रहाण्य भारती – भाषा भारती, जनवरी–मार्च 1995
[8] सुब्रहाण्य भारती – भाषा भारती, जनवरी–मार्च 1995
[9] डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल – भारतीय बाल साहित्य–तेलुगु, पृष्ठ 37–38